

सरकारी बजट एवं अर्थव्यवस्था

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सरकारी बजट: अर्थ और घटक

प्रश्न 1 (आसान). सरकारी बजट का अर्थ क्या है?

उत्तर – एक वित्तीय वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और खर्चों का ब्यौरा।

प्रश्न 2 (आसान). भारत में वित्तीय वर्ष कब से कब तक चलता है?

उत्तर – 1 अप्रैल से 31 मार्च तक।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर सरकार अगले साल एक नया एक्सप्रेसवे बनाने के लिए पैसे आवंटित करती है, तो यह बजट के किस हिस्से में आएगा - प्राप्तियों में या खर्चों में?

उत्तर – यह खर्चों में आएगा, क्योंकि यह सरकार द्वारा किया जाने वाला व्यय है।

प्रश्न 4 (कठिन). एक 'वार्षिक वित्तीय ब्यौरा' और 'सरकारी बजट' में क्या अंतर है?

उत्तर – संविधान के अनुसार 'वार्षिक वित्तीय ब्यौरा' ही सरकार का मुख्य बजट संबंधी घोषणा पत्र होता है। दोनों एक ही चीज़ के नाम हैं, बस कानूनी भाषा में 'वार्षिक वित्तीय ब्यौरा' कहा जाता है और आम बोलचाल में 'सरकारी बजट'।

» सरकारी बजट के उद्देश्य: आवंटन कार्य

प्रश्न 5 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सी सार्वजनिक वस्तु का उदाहरण है: (a) तुम्हारा मोबाइल फोन (b) राष्ट्रीय रक्षा (c) एक नया टीवी

उत्तर – राष्ट्रीय रक्षा

प्रश्न 6 (आसान). सार्वजनिक वस्तुओं की एक विशेषता यह है कि वे _____ होती हैं। (सही शब्द भरें)

उत्तर – गैर-प्रतिद्वंद्वी / गैर-अपवर्जनीय

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर सरकार किसी शहर में नई सड़कें बनाती है, तो यह सरकारी बजट के किस उद्देश्य का उदाहरण है? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर – यह 'आवंटन कार्य' का उदाहरण है। सड़कें सार्वजनिक वस्तुएँ हैं, जो गैर-प्रतिद्वंद्वी (एक के उपयोग से दूसरे का उपयोग कम नहीं होता) और गैर-अपवर्जनीय (किसी को उपयोग से रोका नहीं जा सकता) होती हैं। बाजार ऐसी वस्तुओं का कुशलता से प्रावधान नहीं कर सकता, इसलिए सरकार को बजट के माध्यम से इनका आवंटन करना पड़ता है।

प्रश्न 8 (कठिन). कुछ लोग सड़क या सुरक्षा जैसी सार्वजनिक वस्तुओं के लिए टैक्स नहीं देना चाहते, लेकिन उनका लाभ उठाना चाहते हैं। इन्हें क्या कहा जाता है और सरकार इस समस्या से कैसे निपटती है?

उत्तर – इन्हें 'मुफ्तखोर' (free riders) कहा जाता है। चूंकि सार्वजनिक वस्तुएँ गैर-अपवर्जनीय होती हैं, सरकार किसी को भी लाभ उठाने से रोक नहीं सकती, भले ही उन्होंने भुगतान न किया हो। इस समस्या से निपटने के लिए, सरकार बजट के माध्यम से 'अनिवार्य कराधान' (compulsory taxation) करती है, जिससे सभी नागरिकों से कर वसूला जाता है और फिर उन पैसों से इन सार्वजनिक वस्तुओं का प्रावधान किया जाता है।

» सार्वजनिक बनाम निजी वस्तुएं

प्रश्न 9 (आसान). पुलिस सेवाएँ किस प्रकार की वस्तु का उदाहरण हैं - सार्वजनिक या निजी?

उत्तर – सार्वजनिक वस्तु।

प्रश्न 10 (आसान). अगर कोई वस्तु 'गैर-प्रतिस्पर्धी' है, तो इसका क्या मतलब है?

उत्तर – मतलब एक व्यक्ति के इस्तेमाल से दूसरे के लिए उसकी उपलब्धता कम नहीं होती।

प्रश्न 11 (मध्यम). सिनेमा हॉल में फिल्म देखना सार्वजनिक वस्तु है या निजी? समझाओ।

उत्तर – निजी वस्तु। क्योंकि यह 'प्रतिस्पर्धी' है (सीटें सीमित हैं) और 'अपवर्जनीय' (बिना टिकट के अंदर नहीं जा सकते)।

प्रश्न 12 (कठिन). मुफ्तखोर समस्या (Free-rider problem) सार्वजनिक वस्तुओं से कैसे जुड़ी है?

उत्तर – सार्वजनिक वस्तुएँ 'गैर-अपवर्जनीय' होती हैं, इसलिए लोग बिना भुगतान किए भी उनका लाभ उठा सकते हैं। ऐसे में कोई भी स्वेच्छा से भुगतान नहीं करना चाहेगा, जिससे 'मुफ्तखोर समस्या' पैदा होती है, और इसीलिए सरकार को इन वस्तुओं को उपलब्ध कराना पड़ता है।

» सरकारी बजट के उद्देश्य: पुनर्वितरण कार्य

प्रश्न 13 (आसान). पुनर्वितरण कार्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – आय असमानता को कम करके न्याय-संगत वितरण सुनिश्चित करना।

प्रश्न 14 (आसान). क्या सब्सिडी देना पुनर्वितरण कार्य का हिस्सा है?

उत्तर – हाँ, सब्सिडी देना पुनर्वितरण कार्य का हिस्सा है।

प्रश्न 15 (मध्यम). सरकार पुनर्वितरण के लिए कौन से दो मुख्य उपकरण इस्तेमाल करती है?

उत्तर – कर (Taxes) और हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payments)।

प्रश्न 16 (कठिन). अगर सरकार अमीर लोगों पर ज़्यादा टैक्स लगाए और गरीबों को मुफ्त शिक्षा दे, तो यह बजट के किस उद्देश्य को दर्शाता है?

उत्तर – यह बजट के 'पुनर्वितरण कार्य' उद्देश्य को दर्शाता है।

» सरकारी बजट के उद्देश्य: स्थिरीकरण कार्य

प्रश्न 17 (आसान). स्थिरीकरण कार्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – आय और रोजगार में उतार-चढ़ाव को कम करना।

प्रश्न 18 (आसान). जब अर्थव्यवस्था में मांग बहुत अधिक हो जाती है, तो सरकार क्या करती है?

उत्तर – मांग को कम करने के लिए प्रतिबंधात्मक उपाय करती है।

प्रश्न 19 (मध्यम). मुद्रास्फीति के दौरान सरकार किस प्रकार का 'स्थिरीकरण कार्य' करेगी?

उत्तर – मुद्रास्फीति में मांग अधिक होती है, इसलिए सरकार मांग को कम करने के लिए सार्वजनिक व्यय घटाएगी, कर बढ़ाएगी, और सब्सिडी कम कर सकती है।

प्रश्न 20 (कठिन). सरकारी बजट का 'पुनर्वितरण कार्य' और 'स्थिरीकरण कार्य' एक-दूसरे से कैसे भिन्न हैं, लेकिन फिर भी एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर – पुनर्वितरण कार्य आय के असमान वितरण को ठीक करता है, जबकि स्थिरीकरण कार्य आर्थिक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करता है। हालांकि, सरकार द्वारा मंदी में मांग बढ़ाने के लिए दिया गया बेरोजगारी भत्ता (स्थिरीकरण) आय के वितरण को भी प्रभावित कर सकता है (पुनर्वितरण)। दोनों ही समाज के आर्थिक कल्याण से जुड़े हैं।

» प्राप्तियों का वर्गीकरण: राजस्व प्राप्ति

प्रश्न 21 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सी एक राजस्व प्राप्ति है? (a) सरकार द्वारा लिया गया ऋण (b) निगम कर (c) सरकारी संपत्ति की बिक्री

उत्तर – (b) निगम कर

प्रश्न 22 (आसान). 'राजस्व प्राप्तियों' को 'गैर-प्रतिदेय' क्यों कहते हैं?

उत्तर – क्योंकि सरकार को ये पैसा वापस नहीं करना पड़ता।

प्रश्न 23 (मध्यम). सरकार ने किसी व्यक्ति से आयकर (Income Tax) लिया। क्या यह 'राजस्व प्राप्ति' है या 'पूंजीगत प्राप्ति'? कारण बताएं।

उत्तर – यह 'राजस्व प्राप्ति' है, क्योंकि सरकार को यह पैसा वापस नहीं करना पड़ता और न ही इससे उसकी कोई देनदारी (liability) बनती है।

प्रश्न 24 (कठिन). एक उदाहरण देकर समझाएं कि 'राजस्व प्राप्तियां' अर्थव्यवस्था के 'स्थिरीकरण कार्य' में कैसे मदद करती हैं।

उत्तर – जब अर्थव्यवस्था में मंदी होती है, तो सरकार करों में कमी करके लोगों की क्रय शक्ति बढ़ा सकती है (जो कि राजस्व प्राप्ति का एक हिस्सा है, भले ही कम हो)। जब महंगाई होती है, तो कर बढ़ाकर मांग को नियंत्रित कर सकती है। इस तरह, 'राजस्व प्राप्तियां' (और उनमें बदलाव) सीधे 'स्थिरीकरण कार्य' को प्रभावित करती हैं।

» प्राप्तियों का वर्गीकरण: पूंजीगत प्राप्ति

प्रश्न 25 (आसान). क्या सरकार द्वारा किसी देश से लिया गया 'लोन' पूंजीगत प्राप्ति है?

उत्तर – हाँ

प्रश्न 26 (आसान). क्या किसी सरकारी कंपनी में अपनी हिस्सेदारी (शेयर) बेचना पूंजीगत प्राप्ति है?

उत्तर – हाँ

प्रश्न 27 (मध्यम). सरकार ने अपनी एक पुरानी इमारत बेच दी। यह किस प्रकार की प्राप्ति है?

उत्तर – यह पूंजीगत प्राप्ति है, क्योंकि सरकार की एक संपत्ति (इमारत) कम हो गई।

प्रश्न 28 (कठिन). बताओ, सरकार ने राज्यों को जो ऋण दिए थे, उनमें से कुछ की वसूली हुई। यह किस प्रकार की प्राप्ति है और क्यों?

उत्तर – यह पूंजीगत प्राप्ति है। जब सरकार ने राज्यों को ऋण दिया था, तो वह उसकी संपत्ति थी (उसे पैसा वापस मिलना था)। अब जब ऋण की वसूली हो रही है, तो सरकार की 'वित्तीय संपत्ति' (ऋण) कम हो रही है, क्योंकि वह 'वापस' आ गया है। हालाँकि इससे नकदी बढ़ी है, लेकिन परिसंपत्ति का स्वरूप बदल गया है।

» व्यय का वर्गीकरण: राजस्व व्यय

प्रश्न 29 (आसान). निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्व व्यय है: 'रक्षा सेवाओं पर खर्च' या 'मेट्रो लाइन का निर्माण'?

उत्तर – रक्षा सेवाओं पर खर्च

प्रश्न 30 (आसान). क्या 'ब्याज अदायगी' राजस्व व्यय है?

उत्तर – हाँ

प्रश्न 31 (मध्यम). सरकार ने बाढ़ पीड़ितों को जो सहायता राशि दी, क्या वह राजस्व व्यय है? क्यों?

उत्तर – हाँ, यह राजस्व व्यय है। क्योंकि इससे न कोई नई परिसंपत्ति बनी और न ही सरकार का कोई पुराना दायित्व (कर्ज) कम हुआ। यह एक कल्याणकारी व्यय है।

प्रश्न 32 (कठिन). अगर सरकार ने किसी पुराने सरकारी अस्पताल में नई अत्याधुनिक मशीनें खरीदीं, तो क्या यह राजस्व व्यय होगा या पूंजीगत व्यय? अपना उत्तर तर्क सहित दें।

उत्तर – यह पूंजीगत व्यय होगा। क्योंकि नई मशीनें खरीदना सरकार की 'भौतिक परिसंपत्तियों' में वृद्धि करता है। यह एक ऐसा निवेश है जो भविष्य में सेवाओं के उत्पादन में मदद करेगा।

» व्यय का वर्गीकरण: पूंजीगत व्यय

प्रश्न 33 (आसान). सरकार द्वारा नई स्कूल बिल्डिंग बनाने का खर्च?

उत्तर – पूंजीगत व्यय

प्रश्न 34 (आसान). सरकार द्वारा पुराने कर्ज की मूल राशि चुकाना?

उत्तर – पूंजीगत व्यय

प्रश्न 35 (मध्यम). सरकार ने किसी सरकारी कंपनी के शेयर खरीदे। यह किस तरह का व्यय है?

उत्तर – यह पूंजीगत व्यय है क्योंकि शेयरों में निवेश करना 'वित्तीय परिसंपत्ति' का सृजन करता है।

प्रश्न 36 (कठिन). राज्य सरकारों को केंद्र सरकार द्वारा दिया गया ऋण (Loan) किस प्रकार का व्यय है?

उत्तर – यह पूंजीगत व्यय है, क्योंकि केंद्र सरकार के लिए यह एक 'वित्तीय परिसंपत्ति' (ऋण की वसूली का अधिकार) का निर्माण करता है।

» संतुलित, अधिशेष और घाटा बजट

प्रश्न 37 (आसान). यदि सरकार की कुल आय ₹500 करोड़ है और कुल व्यय भी ₹500 करोड़ है, तो यह कौन सा बजट है?

उत्तर – संतुलित बजट

प्रश्न 38 (आसान). किस प्रकार के बजट में सरकार की आय उसके व्यय से कम होती है?

उत्तर – घाटा बजट

प्रश्न 39 (मध्यम). सरकार ने अनुमान लगाया कि इस साल उसे ₹8000 करोड़ की टैक्स से आय होगी, और ₹9500 करोड़ का खर्च करना पड़ेगा। यह कौन सा बजट है?

उत्तर – घाटा बजट

प्रश्न 40 (कठिन). एक देश ने कोरोना महामारी के दौरान लोगों को सहायता देने के लिए अपने स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा व्यय में भारी वृद्धि की, लेकिन उसकी राजस्व प्राप्तियां कम रहीं। इस स्थिति में, देश का बजट किस प्रकार का होगा और क्यों?

उत्तर – इस स्थिति में देश का बजट 'घाटा बजट' होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि महामारी के कारण सरकार का व्यय (स्वास्थ्य, सहायता आदि पर) बहुत बढ़ गया होगा, जबकि आर्थिक गतिविधियों में कमी के कारण टैक्स से होने वाली आय (राजस्व प्राप्तियां) कम हो गई होगी। जब व्यय आय से अधिक हो जाता है, तो घाटा बजट बनता है।

» सरकारी घाटे की माप: राजस्व घाटा

प्रश्न 41 (आसान). अगर सरकार का राजस्व व्यय ₹500 करोड़ है और राजस्व प्राप्तियां ₹450 करोड़ हैं, तो राजस्व घाटा कितना होगा?

उत्तर – ₹50 करोड़

प्रश्न 42 (आसान). राजस्व घाटे की स्थिति में सरकार किस प्रकार के खर्चों को अपनी आय से पूरा नहीं कर पा रही है?

उत्तर – रोजमर्रा के उपभोग संबंधी खर्चों को।

प्रश्न 43 (मध्यम). यदि सरकार का राजस्व घाटा ₹200 करोड़ है और राजस्व प्राप्तियां ₹1200 करोड़ हैं, तो सरकार का राजस्व व्यय कितना था?

उत्तर – ₹1400 करोड़

प्रश्न 44 (कठिन). एक उच्च राजस्व घाटा अर्थव्यवस्था के लिए किस तरह के 'नकारात्मक संकेत' देता है? कोई दो कारण बताओ।

उत्तर – 1. सरकार को अपने रोजमर्रा के खर्चों के लिए भी उधार लेना पड़ रहा है, जिससे 'कर्ज का बोझ' बढ़ता है। 2. यह 'विकास परियोजनाओं' या 'कल्याणकारी योजनाओं' के लिए निवेश की कमी का संकेत है, क्योंकि उधार का पैसा उपभोग में जा रहा है।

» सरकारी घाटे की माप: राजकोषीय घाटा

प्रश्न 45 (आसान). राजकोषीय घाटा क्या दर्शाता है?

उत्तर – यह सरकार की कुल उधार लेने की ज़रूरत को दर्शाता है।

प्रश्न 46 (आसान). गैर-ऋण से सृजित पूँजीगत प्राप्तियों के दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर – ऋणों की वसूली और सार्वजनिक उपक्रमों की बिक्री से प्राप्त राशि।

प्रश्न 47 (मध्यम). यदि कुल व्यय 30,000 करोड़, राजस्व प्राप्तियाँ 18,000 करोड़ और गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्तियाँ 4,000 करोड़ हैं, तो राजकोषीय घाटा कितना होगा?

उत्तर – राजकोषीय घाटा = $30,000 - (18,000 + 4,000) = 30,000 - 22,000 = 8,000$ करोड़ रुपये।

प्रश्न 48 (कठिन). एक उच्च राजकोषीय घाटा अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित कर सकता है?

उत्तर – उच्च राजकोषीय घाटा सरकार के ऋण के बोझ को बढ़ाता है, ब्याज भुगतान बढ़ाता है, निजी निवेश के लिए संसाधनों को कम कर सकता है (क्राउडिंग आउट) और भविष्य की पीढ़ियों पर भार डाल सकता है।

» सरकारी घाटे की माप: प्राथमिक घाटा

प्रश्न 49 (आसान). अगर राजकोषीय घाटा 70,000 करोड़ रुपये और ब्याज अदायगी 20,000 करोड़ रुपये है, तो प्राथमिक घाटा कितना होगा?

उत्तर – 50,000 करोड़ रुपये

प्रश्न 50 (आसान). प्राथमिक घाटा क्यों निकाला जाता है?

उत्तर – वर्तमान वित्तीय असंतुलन जानने के लिए, ब्याज का बोझ हटाकर।

प्रश्न 51 (मध्यम). किसी वर्ष सरकार का कुल व्यय 1,00,000 करोड़ रुपये था और कुल प्राप्तियाँ (ऋण-ग्रहण को छोड़कर) 75,000 करोड़ रुपये थीं। यदि ब्याज अदायगी 10,000 करोड़ रुपये थी, तो प्राथमिक घाटा कितना होगा?

उत्तर – पहले राजकोषीय घाटा = कुल व्यय - कुल प्राप्तियाँ (ऋण-ग्रहण को छोड़कर) = $1,00,000 - 75,000 = 25,000$ करोड़ रुपये। अब, प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज अदायगी = $25,000 - 10,000 = 15,000$ करोड़ रुपये।

प्रश्न 52 (कठिन). अगर किसी देश का प्राथमिक घाटा शून्य है, तो इसका क्या अर्थ है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि सरकार को 'ब्याज अदायगी' को छोड़कर, अपने 'वर्तमान खर्चों' को पूरा करने के लिए कोई नया उधार लेने की आवश्यकता नहीं है। इस स्थिति में, 'राजकोषीय घाटा' 'ब्याज अदायगी' के बराबर होगा।

» राजकोषीय नीति और गुणक प्रभाव

प्रश्न 53 (आसान). राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – निर्गत (output) और रोजगार (employment) के स्तर को स्थिर करना।

प्रश्न 54 (आसान). सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) क्या होती है?

उत्तर – यह अतिरिक्त आय का वह हिस्सा है जिसे लोग उपभोग पर खर्च करते हैं।

प्रश्न 55 (मध्यम). यदि MPC 0.8 है, तो सरकारी व्यय गुणक का मान क्या होगा?

उत्तर – $1 / (1 - 0.8) = 1 / 0.2 = 5$ ।

प्रश्न 56 (कठिन). यदि MPC 0.6 है और सरकार 100 करोड़ रुपये का सरकारी व्यय बढ़ाती है, साथ ही 50 करोड़ रुपये के करों में कटौती करती है, तो कुल आय में निवल परिवर्तन क्या होगा?

उत्तर – सरकारी व्यय गुणक = $1 / (1 - 0.6) = 1 / 0.4 = 2.5$ । सरकारी व्यय से आय में वृद्धि = $2.5 * 100 = 250$ करोड़। कर गुणक = $-0.6 / (1 - 0.6) = -0.6 / 0.4 = -1.5$ । कर कटौती से आय में वृद्धि = $-1.5 * (-50) = 75$ करोड़। कुल निवल वृद्धि = $250 + 75 = 325$ करोड़ रुपये।

» संतुलित बजट गुणक और आनुपातिक कर

प्रश्न 57 (आसान). संतुलित बजट गुणक का मान कितना होता है?

उत्तर – 1

प्रश्न 58 (आसान). यदि सरकारी व्यय ₹50 करोड़ बढ़ता है और कर भी ₹50 करोड़ बढ़ते हैं, तो कुल आय में कितना परिवर्तन होगा?

उत्तर – ₹50 करोड़ की वृद्धि

प्रश्न 59 (मध्यम). आनुपातिक करों का क्या अर्थ है? यह समग्र मांग को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर – आनुपातिक कर वे होते हैं जहाँ कर की राशि आय के एक निश्चित अनुपात (जैसे $T = tY$) में तय होती है। यह उपभोग को कम करता है और समग्र मांग अनुसूची को सपाट बनाता है, जिससे गुणक का मान कम हो जाता है।

प्रश्न 60 (कठिन). आनुपातिक करों की उपस्थिति में सरकारी व्यय गुणक का सूत्र लिखिए और बताइए कि यह इकमुश्त करों की तुलना में क्यों कम होता है?

उत्तर – आनुपातिक करों की उपस्थिति में गुणक $= 1 / [1 - c(1 - t)]$ । यह इकमुश्त करों की तुलना में कम होता है क्योंकि आय बढ़ने पर उसका एक हिस्सा करों के रूप में सरकार के पास चला जाता है, जिससे 'प्रयोज्य आय' कम बढ़ती है और 'प्रेरित उपभोग व्यय' भी कम होता है। 'The marginal propensity to consume falls to $c(1-t)$ ' जिससे गुणक का असर कम हो जाता है।

» सरकारी ऋण: बोझ और समतुल्यता

प्रश्न 61 (आसान). सरकारी ऋण क्या है?

उत्तर – सरकार द्वारा अपने घाटे को पूरा करने के लिए लिया गया उधार।

प्रश्न 62 (आसान). सरकारी ऋण को बोझ क्यों माना जाता है?

उत्तर – क्योंकि इसका भुगतान भविष्य की पीढ़ियों पर करों के रूप में पड़ता है।

प्रश्न 63 (मध्यम). परंपरागत दृष्टिकोण के अनुसार सरकारी ऋण का उपभोग और बचत पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर – सरकारी ऋण से भविष्य में कर बढ़ने की उम्मीद में लोग वर्तमान में ज़्यादा उपभोग करते हैं और बचत घटाते हैं, जिससे राष्ट्रीय बचत कम होती है।

प्रश्न 64 (कठिन). रिकार्डो समतुल्यता क्या है और यह परंपरागत दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है?

उत्तर – रिकार्डो समतुल्यता बताती है कि कर और ऋण-ग्रहण वित्त के समतुल्य साधन हैं। उपभोक्ता दूरदर्शी होते हैं और भविष्य के करों का अनुमान लगाकर आज ही बचत बढ़ा देते हैं, जिससे राष्ट्रीय बचत अपरिवर्तित रहती है। यह परंपरागत दृष्टिकोण से भिन्न है क्योंकि परंपरागत दृष्टिकोण ऋण को बोझ मानता है और राष्ट्रीय बचत को कम करता है।

» घाटे में कटौती और राजकोषीय उत्तरदायित्व

प्रश्न 65 (आसान). राजकोषीय घाटा कम करने के दो मुख्य तरीके कौन से हैं?

उत्तर – करों में वृद्धि और व्यय में कटौती।

प्रश्न 66 (आसान). FRBMA का पूरा नाम क्या है?

उत्तर – राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम।

प्रश्न 67 (मध्यम). सरकार व्यय में कटौती करते समय किन क्षेत्रों में सावधानी बरतती है और क्यों?

उत्तर – सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, और गरीबी निवारण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कटौती से बचती है, क्योंकि इससे अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है और लोगों का कल्याण प्रभावित हो सकता है।

प्रश्न 68 (कठिन). अप्रत्यक्ष करों को प्रतिगामी क्यों माना जाता है और इसका घाटा कम करने के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर – अप्रत्यक्ष कर प्रतिगामी होते हैं क्योंकि वे आय के स्तर की परवाह किए बिना सभी पर समान रूप से लागू होते हैं, जिससे गरीबों पर आय के प्रतिशत के रूप में अधिक बोझ पड़ता है। घाटा कम करने के लिए इन पर अत्यधिक निर्भरता सामाजिक असमानता बढ़ा सकती है, इसलिए सरकारें प्रत्यक्ष करों पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं जो आय के अनुसार लगाए जा सकते हैं।

» वस्तु एवं सेवाकर (GST)

प्रश्न 69 (आसान). GST का पूरा नाम क्या है?

उत्तर – वस्तु एवं सेवाकर (Goods and Services Tax)

प्रश्न 70 (आसान). GST किस वर्ष लागू किया गया था?

उत्तर – जुलाई 2017

प्रश्न 71 (मध्यम). GST 'अप्रत्यक्ष कर' क्यों कहलाता है?

उत्तर – यह सीधे व्यक्ति की आय पर नहीं लगता, बल्कि वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर लगता है, और इसका बोझ अंततः उपभोक्ता पर पड़ता है, इसलिए इसे अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।

प्रश्न 72 (कठिन). GST की 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' की अवधारणा का क्या अर्थ है और यह कैसे पुराने करों से बेहतर है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं पर एक ही प्रकार का और एक ही दर से टैक्स लगेगा, जिससे पूरे देश में एक समान बाजार बनेगा। यह पुराने करों से बेहतर है क्योंकि पहले हर राज्य में अलग-अलग टैक्स होते थे, जिससे सामान महंगा हो जाता था और व्यापार करना मुश्किल होता था। GST ने 'करों के सोपानन' (cascading effect) को खत्म कर दिया, यानी 'टैक्स पर टैक्स' लगने की समस्या दूर हो गई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए कि भारत सरकार ने वर्ष 2024-25 के लिए अपने बजट में अनुमानित कर प्राप्तियाँ 30 लाख करोड़ रुपये और अनुमानित सड़क निर्माण व्यय 5 लाख करोड़ रुपये रखा है। इस जानकारी के आधार पर, यह किस प्रकार का वित्तीय ब्यौरा है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'कर प्राप्तियाँ' सरकार के पास आने वाला पैसा है, यानी यह 'receipt' या 'प्राप्ति' है।

› दूसरा कदम: 'सड़क निर्माण व्यय' सरकार द्वारा किया जाने वाला खर्च है, यानी यह 'expenditure' या 'व्यय' है।

› तीसरा कदम: जब सरकार 'एक वित्तीय वर्ष' के लिए 'अनुमानित प्राप्तियों तथा खर्चों का ब्यौरा' देती है, तो उसे 'सरकारी बजट' कहा जाता है।

› चौथा कदम: दी गई स्थिति में, सरकार ने 2024-25 वित्तीय वर्ष के लिए अपनी अनुमानित प्राप्तियाँ (कर) और व्यय (सड़क) बताए हैं।

उत्तर – यह भारत सरकार का वर्ष 2024-25 के लिए 'सरकारी बजट' का एक हिस्सा है, जिसमें राजस्व प्राप्तियाँ (कर) और पूंजीगत व्यय (सड़क निर्माण) शामिल हैं।

उदाहरण 2. बताओ, एक निजी कार और एक सरकारी पार्क में क्या अंतर है जिससे सरकार को पार्क उपलब्ध कराना पड़ता है?

› पहला, निजी कार 'प्रतिद्वंद्वी' है: 'यदि एक व्यक्ति एक कार चलाता है, तो कोई दूसरा व्यक्ति उसी समय उसी कार को नहीं चला सकता।' यानी, एक का उपयोग दूसरे के लिए कम करता है।

› दूसरा, निजी कार 'अपवर्जनीय' है: 'जिस व्यक्ति ने कार के लिए भुगतान नहीं किया है, उसे कार चलाने से वंचित किया जा सकता है।' अगर तुम पैसे नहीं दोगे तो कार नहीं मिलेगी।

› इसके विपरीत, सरकारी पार्क 'गैर-प्रतिद्वंद्वी' है: 'एक व्यक्ति द्वारा पार्क में टहलने से दूसरों के लिए पार्क के उपयोग की उपलब्धता कम नहीं होती।'।

› और सरकारी पार्क 'गैर-अपवर्जनीय' है: 'पार्क में टहलने के लिए किसी को भी भुगतान न करने पर रोका नहीं जा सकता।'।

› चूंकि पार्क एक सार्वजनिक वस्तु है जिसमें गैर-प्रतिद्वंद्वी और गैर-अपवर्जनीय गुण हैं, इसलिए बाजार इसे कुशलता से प्रदान नहीं कर सकता, और सरकार को 'आवंटन कार्य' के तहत इसे उपलब्ध कराना पड़ता है।

उत्तर – निजी कार प्रतिद्वंद्वी और अपवर्जनीय है जबकि सरकारी पार्क गैर-प्रतिद्वंद्वी और गैर-अपवर्जनीय है। इन्हीं गुणों

के कारण पार्क सार्वजनिक वस्तु है जिसे सरकार आवंटन कार्य के तहत प्रदान करती है।

उदाहरण 3. मान लो, 'स्ट्रीट लाइट' और 'एक आइसक्रीम' – इनमें से कौन सी सार्वजनिक वस्तु है और क्यों?

› पहला: हम 'स्ट्रीट लाइट' को देखते हैं। क्या 'एक व्यक्ति द्वारा एक वस्तु का उपभोग दूसरों के लिए उसके उपयोग की उपलब्धता को कम करेगा?' नहीं, अगर एक आदमी स्ट्रीट लाइट का फायदा उठा रहा है, तो दूसरा भी उठा सकता है, किसी के लिए रौशनी कम नहीं होती। मतलब यह 'गैर-प्रतिस्पर्धी' है।

› दूसरा: क्या 'जो व्यक्ति वस्तु के लिए भुगतान नहीं करता, उसे इसका लाभ उठाने से वंचित किया जा सकता है?' नहीं, स्ट्रीट लाइट से रौशनी सबको मिलती है, चाहे कोई टैक्स दे या न दे, उसे रोका नहीं जा सकता। मतलब यह 'गैर-अपवर्जनीय' है।

› तीसरा: अब 'एक आइसक्रीम' को देखते हैं। अगर तुम 'एक आइसक्रीम खाते हो', तो क्या कोई और उसे खा सकता है? नहीं, एक बार तुमने खाई तो खत्म। यह 'प्रतिस्पर्धी' है। और अगर तुमने पैसे नहीं दिए तो तुम्हें आइसक्रीम नहीं मिलेगी, है ना? तो यह 'अपवर्जनीय' भी है।

उत्तर – तो 'स्ट्रीट लाइट' एक सार्वजनिक वस्तु है क्योंकि यह 'गैर-प्रतिस्पर्धी' और 'गैर-अपवर्जनीय' दोनों है, जबकि 'आइसक्रीम' एक निजी वस्तु है।

उदाहरण 4. सरकार आय असमानता को कम करने के लिए कर और हस्तांतरण भुगतान का उपयोग कैसे करती है? समझाओ।

› पहला कदम: 'प्रगतिशील कर' (Progressive Tax) लगाना। इसका मतलब है, 'जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे कर की दर ऊँची होती जाती है।' यानी, ज़्यादा कमाने वालों पर ज़्यादा प्रतिशत टैक्स लगता है।

› दूसरा कदम: 'हस्तांतरण भुगतान' (Transfer Payments) करना। इसमें सरकार बिना किसी चीज़ के बदले, सीधे पैसा देती है या लाभ पहुँचाती है। जैसे, वृद्धों को पेंशन, विधवाओं को भत्ता, या किसानों को सीधे खाते में आर्थिक सहायता।

› तीसरा कदम: 'जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओं' पर कर कम या शून्य करना और 'विलासिता' की वस्तुओं पर कर ज़्यादा लगाना। उदाहरण के लिए, दाल-चावल पर कम टैक्स और शराब-तंबाकू पर ज़्यादा टैक्स।

› इन सब उपायों से 'सरकार आय के वितरण को परिवर्तित कर सकती है' और गरीब और अमीर के बीच के अंतर को थोड़ा कम कर सकती है।

उत्तर – सरकार प्रगतिशील कर लगाकर और हस्तांतरण भुगतान करके, साथ ही अनिवार्य और विलासिता की वस्तुओं पर अलग-अलग कर दरें लागू करके आय असमानता को कम करती है, जिससे समाज में एक न्याय-संगत वितरण स्थापित होता है।

उदाहरण 5. यदि देश में आर्थिक मंदी का दौर चल रहा है, तो सरकार 'स्थिरीकरण कार्य' के अंतर्गत क्या कदम उठा सकती है?

› पहला कदम: मंदी का मतलब है 'समग्र मांग' का कम होना और 'रोजगार में कमी' आना।

› दूसरा कदम: सरकार को 'मांग का विस्तार' करना होगा ताकि लोग अधिक खरीदारी करें और उत्पादन बढ़े।

› तीसरा कदम: इसके लिए सरकार अपने 'खर्च बढ़ा' सकती है (जैसे नई सड़कें बनाना, स्कूल बनाना), 'टैक्स कम कर सकती है' ताकि लोगों के पास खर्च करने के लिए ज़्यादा पैसा बचे, और 'सब्सिडी' या 'हस्तांतरण भुगतान' (जैसे बेरोजगारी भत्ता) बढ़ा सकती है।

› चौथा कदम: इन कदमों से लोगों के हाथ में पैसा आएगा, वे ज़्यादा खर्च करेंगे, फैक्ट्रियों में काम बढ़ेगा, और नए रोजगार पैदा होंगे, जिससे अर्थव्यवस्था फिर से स्थिर होगी।

उत्तर – आर्थिक मंदी में, सरकार मांग बढ़ाने के लिए सार्वजनिक व्यय में वृद्धि, करों में कमी, और हस्तांतरण भुगतान में वृद्धि जैसे कदम उठाती है।

उदाहरण 6. सरकार को मिलने वाले किन पैसों को 'राजस्व प्राप्तियां' कहेंगे?

- › पहचानो कि क्या यह पैसा सरकार को वापस लौटाना है या नहीं।
- › अगर सरकार को यह पैसा वापस नहीं लौटाना है और इससे सरकार की कोई देनदारी नहीं बढ़ रही है, तो वह 'राजस्व प्राप्ति' है।
- › उदाहरण के लिए, अगर सरकार किसी कंपनी से 'कॉर्पोरेशन टैक्स' लेती है, तो यह पैसा सरकार को वापस नहीं देना पड़ता।
- › अगर सरकार किसी से 'उधार' लेती है, तो उसे ब्याज के साथ वापस करना होगा, इसलिए यह राजस्व प्राप्ति नहीं है।

उत्तर – सरकार को मिलने वाला कोई भी पैसा जिसे उसे वापस लौटाना नहीं पड़ता और न ही जिससे सरकार पर कोई देनदारी बनती है, वो 'राजस्व प्राप्तियां' कहलाती हैं। जैसे- कर से प्राप्त आय, सरकारी सेवाओं से शुल्क।

उदाहरण 7. सरकार ने भारतीय स्टेट बैंक से 50,000 करोड़ रुपये का ऋण लिया। पहचानें कि यह किस प्रकार की प्राप्ति है और क्यों?

- › पहला कदम: हमें यह देखना है कि क्या इस प्राप्ति से सरकार पर कोई 'देयता' (liability) पैदा हो रही है या क्या उसकी 'वित्तीय संपत्ति' (financial asset) कम हो रही है।
- › दूसरा कदम: सरकार ने 50,000 करोड़ रुपये का ऋण लिया है। ऋण का मतलब है कि सरकार को भविष्य में ये पैसे ब्याज सहित वापस लौटाने होंगे।
- › तीसरा कदम: इसका मतलब है कि सरकार पर 'देयता' पैदा हो रही है। पैसा तो आ रहा है, लेकिन उसे चुकाना भी पड़ेगा।

उत्तर – यह 'पूंजीगत प्राप्ति' है, क्योंकि इससे सरकार की देयता (उधार चुकाने की जिम्मेदारी) पैदा हो रही है।

उदाहरण 8. नीचे दिए गए खर्चों में से राजस्व व्यय की पहचान करें: (i) स्कूल भवन का निर्माण, (ii) सरकारी कर्मचारियों का वेतन, (iii) पुरानी सड़क की मरम्मत, (iv) विदेश से लिए गए कर्ज पर ब्याज का भुगतान।

- › पहला देखो: 'स्कूल भवन का निर्माण'। इसमें एक नई इमारत बन रही है, यानी एक नई संपत्ति। तो यह राजस्व व्यय नहीं है।
- › दूसरा: 'सरकारी कर्मचारियों का वेतन'। इससे कोई नई संपत्ति नहीं बनी, न कोई पुराना कर्ज कम हुआ। यह रोजमर्रा का खर्च है। तो यह राजस्व व्यय है।
- › तीसरा: 'पुरानी सड़क की मरम्मत'। मरम्मत से सड़क नई नहीं बन जाती, बस उसकी मौजूदा हालत सुधरती है। अगर बहुत बड़ा सुधार होता जिससे सड़क की क्षमता बहुत बढ़ जाती, तो शायद पूंजीगत हो सकता था, पर सिर्फ मरम्मत आमतौर पर राजस्व व्यय है क्योंकि इससे कोई नई 'परिसंपत्ति' नहीं बनी।
- › चौथा: 'विदेश से लिए गए कर्ज पर ब्याज का भुगतान'। यह ब्याज चुकाया जा रहा है, कर्ज की मूल राशि कम नहीं हो रही। इससे भी कोई नई संपत्ति नहीं बन रही। तो यह भी राजस्व व्यय है।

उत्तर – राजस्व व्यय हैं: (ii) सरकारी कर्मचारियों का वेतन, (iii) पुरानी सड़क की मरम्मत, और (iv) विदेश से लिए गए कर्ज पर ब्याज का भुगतान।

उदाहरण 9. भारत सरकार ने एक नया रेलवे ट्रैक बनाने के लिए 500 करोड़ रुपये खर्च किए। बताओ यह किस प्रकार का व्यय है?

- › सबसे पहले, यह पहचानो कि इस खर्च से क्या हो रहा है।
- › 500 करोड़ रुपये खर्च करके 'नया रेलवे ट्रैक' बनाया जा रहा है।
- › रेलवे ट्रैक एक 'भौतिक परिसंपत्ति' (Physical Asset) है, जिससे देश की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी।
- › क्योंकि इससे एक नई संपत्ति का सृजन हो रहा है, यह पूंजीगत व्यय कहलाएगा।

उत्तर – यह एक पूंजीगत व्यय है।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक देश की सरकार की अनुमानित कुल प्राप्तियाँ (आय) ₹12 लाख करोड़ हैं और अनुमानित कुल व्यय ₹10 लाख करोड़ है। बताइए यह किस प्रकार का बजट है?

- › सबसे पहले हम कुल प्राप्तियों और कुल व्यय की तुलना करेंगे।
- › यहाँ कुल प्राप्तियाँ = ₹12 लाख करोड़।
- › और कुल व्यय = ₹10 लाख करोड़।
- › अब हम देख सकते हैं कि 'कुल प्राप्तियाँ > कुल व्यय' हैं, यानी आय, व्यय से अधिक है।

उत्तर – यह 'अधिशेष बजट' (Surplus Budget) का एक उदाहरण है।

उदाहरण 11. एक वित्तीय वर्ष में सरकार की राजस्व प्राप्तियाँ ₹80,000 करोड़ हैं और राजस्व व्यय ₹95,000 करोड़ है। राजस्व घाटा ज्ञात कीजिए।

- › हमें दिया गया है: राजस्व प्राप्तियाँ = ₹80,000 करोड़
- › और राजस्व व्यय = ₹95,000 करोड़
- › राजस्व घाटे का सूत्र है: राजस्व घाटा = राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियाँ
- › अब हम मान रखेंगे: राजस्व घाटा = ₹95,000 करोड़ - ₹80,000 करोड़
- › गणना करने पर: राजस्व घाटा = ₹15,000 करोड़

उत्तर – ₹15,000 करोड़

उदाहरण 12. एक देश का कुल सरकारी व्यय 20,000 करोड़ रुपये है। राजस्व प्राप्तियाँ 12,000 करोड़ रुपये हैं और गैर-ऋण से सृजित पूँजीगत प्राप्तियाँ 3,000 करोड़ रुपये हैं। राजकोषीय घाटा ज्ञात कीजिए।

- › राजकोषीय घाटा का सूत्र है: कुल व्यय - (राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण से सृजित पूँजीगत प्राप्तियाँ)
- › दिए गए मानों को सूत्र में रखेंगे: 20,000 करोड़ - (12,000 करोड़ + 3,000 करोड़)
- › पहले कोष्ठक के अंदर की संख्या जोड़ें: 12,000 करोड़ + 3,000 करोड़ = 15,000 करोड़
- › अब घटाएँ: 20,000 करोड़ - 15,000 करोड़

उत्तर – राजकोषीय घाटा = 5,000 करोड़ रुपये।

उदाहरण 13. मान लीजिए किसी देश का 'राजकोषीय घाटा' 50,000 करोड़ रुपये है और 'ब्याज अदायगी' 15,000 करोड़ रुपये है। 'प्राथमिक घाटा' की गणना करें।

- › हमें 'राजकोषीय घाटा' दिया गया है = 50,000 करोड़ रुपये।
- › हमें 'ब्याज अदायगी' दी गई है = 15,000 करोड़ रुपये।
- › 'प्राथमिक घाटा' = 'राजकोषीय घाटा' - 'ब्याज अदायगी' होता है।
- › सूत्र में मान रखने पर: प्राथमिक घाटा = 50,000 करोड़ रुपये - 15,000 करोड़ रुपये।

उत्तर – प्राथमिक घाटा = 35,000 करोड़ रुपये।

उदाहरण 14. मान लीजिए सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.75 है। यदि सरकार अपने खर्चों में 200 करोड़ रुपये की वृद्धि करती है, तो कुल आय में कितनी वृद्धि होगी? और यदि सरकार 200 करोड़ रुपये के करों में कटौती करती है, तो कुल आय में कितनी वृद्धि होगी?

- › पहले हम सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (c) की पहचान करते हैं, जो यहाँ 0.75 है।
- › अब सरकारी व्यय गुणक (Government Expenditure Multiplier) की गणना करेंगे: $1 / (1 - c) = 1 / (1 - 0.75) = 1 / 0.25 = 4$
- › सरकारी व्यय में वृद्धि (G) = 200 करोड़ रुपये। कुल आय में वृद्धि = गुणक × G = 4 × 200 करोड़ = 800 करोड़ रुपये।
- › अब कर गुणक (Tax Multiplier) की गणना करेंगे: $-c / (1 - c) = -0.75 / (1 - 0.75) = -0.75 / 0.25 = -3$
- › करों में कटौती (T) = -200 करोड़ रुपये (कटौती है, इसलिए ऋणात्मक)। कुल आय में वृद्धि = गुणक × T = -3 × (-200 करोड़) = 600 करोड़ रुपये।
- › देखो, सरकारी खर्च से 800 करोड़ की वृद्धि हुई और कर कटौती से 600 करोड़ की। 'सरकार वेफ व्यय गुणक की तुलना में कर गुणक का निरपेक्ष मूल्य अपेक्षाकृत अल्प होता है', जैसा हमने समझा था।

उत्तर – सरकारी व्यय में वृद्धि से कुल आय में 800 करोड़ रुपये की वृद्धि होगी। करों में कटौती से कुल आय में 600 करोड़ रुपये की वृद्धि होगी।

उदाहरण 15. मान लीजिए एक अर्थव्यवस्था में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.8 है। यदि सरकार सरकारी व्यय में ₹100 करोड़ की वृद्धि करती है और साथ ही करों में भी ₹100 करोड़ की वृद्धि करती है, तो कुल आय में कितना परिवर्तन होगा?

› यहाँ हमें 'संतुलित बजट गुणक' का उपयोग करना है, क्योंकि 'सरकारी व्यय में वृद्धि (G)' और 'करों में वृद्धि (T)' बराबर है (दोनों ₹100 करोड़)।

- › संतुलित बजट गुणक हमेशा 1 के बराबर होता है।
- › आय में परिवर्तन (Y) = संतुलित बजट गुणक × (सरकारी व्यय में परिवर्तन) OR (करों में परिवर्तन)
- › $Y = 1 \times G$ या $Y = 1 \times T$
- › $Y = 1 \times ₹100$ करोड़

उत्तर – कुल आय में ₹100 करोड़ की वृद्धि होगी।

उदाहरण 16. एक देश की सरकार ने इस साल 5000 करोड़ का नया ऋण लिया है, जिसका भुगतान भविष्य में करों से किया जाएगा। परंपरागत और रिकार्डो समतुल्यता के सिद्धांतों के अनुसार इसका क्या प्रभाव होगा?

› परंपरागत दृष्टिकोण (Traditional View): इस सिद्धांत के अनुसार, 'सरकार आज बंधपत्र जारी कर जनता से जो ऋण-ग्रहण करती है और उसका भुगतान लगभग 20 वर्ष बाद कर में वृद्धि करके कर सकती है'। इसका मतलब है कि 'ये कर उन युवा आबादी पर लगाए जा सकते हैं, जिसने अभी काम करना आरंभ ही किया है'। इससे 'उनकी प्रयोज्य आय में ह्रास होगा और इस प्रकार उपभोग में भी कमी आयेगी'। अंततः, 'राष्ट्रीय बचत में गिरावट आयेगी' क्योंकि लोग सोचेंगे कि बोझ अगली पीढ़ी पर है, इसलिए वे आज ज़्यादा खर्च करेंगे।

› रिकार्डो समतुल्यता (Ricardian Equivalence): यह सिद्धांत इसके बिल्कुल 'विपरीत तर्क' देता है। 'उपभोक्ता अग्रदूत होते हैं' और 'आने वाली पीढ़ी के बारे में भी चिंतित रहते हैं'। वे समझते हैं कि 'आज ऋण लेने से भविष्य में कर उच्च होगा'। इसलिए, वे 'अब अपनी बचत में वृद्धि करेंगे', ताकि भविष्य के कर के बोझ के लिए तैयार रहें। इस स्थिति में, 'राष्ट्रीय बचत में कोई परिवर्तन नहीं होगा' क्योंकि सरकारी ऋण से जो सार्वजनिक बचत कम होगी, उसकी भरपाई लोग निजी बचत बढ़ाकर कर देंगे।

› निष्कर्ष: परंपरागत मत ऋण को बोझ मानता है और राष्ट्रीय बचत घटाता है, जबकि रिकार्डो समतुल्यता इसे बोझ नहीं मानती और राष्ट्रीय बचत को अपरिवर्तित रखती है, क्योंकि लोग भविष्य के करों का अनुमान लगाकर अपनी बचत बढ़ा देते हैं।

उत्तर – परंपरागत रूप से, यह ऋण भविष्य की पीढ़ी पर कर का बोझ डालेगा और राष्ट्रीय बचत घटाएगा। रिकार्डो समतुल्यता के अनुसार, लोग भविष्य के करों का अनुमान लगाकर अपनी बचत बढ़ाएंगे, जिससे राष्ट्रीय बचत अपरिवर्तित रहेगी।

उदाहरण 17. मान लीजिए एक देश का राजकोषीय घाटा GDP का 7% है। सरकार इसे 3% पर लाना चाहती है। सरकार के पास इसे प्राप्त करने के लिए क्या विकल्प हैं और FRBMA इसके लिए क्या दिशा-निर्देश देता है?

- › पहला कदम: सरकार को यह समझना होगा कि 7% का घाटा बहुत अधिक है और इसे कम करना जरूरी है।
- › दूसरा कदम: सरकार 'करों में वृद्धि' का विकल्प अपना सकती है। जैसे, यदि वह प्रत्यक्ष करों को बढ़ाती है, तो उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि इसका बोझ गरीबों पर न पड़े।
- › तीसरा कदम: सरकार 'व्यय में कटौती' कर सकती है। उसे उन क्षेत्रों की पहचान करनी होगी जहाँ फिजूलखर्ची हो रही है, जैसे सब्सिडी का लीकेज, और उन खर्चों को कम करना होगा जो उत्पादक नहीं हैं। हालांकि, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्रों में कटौती से बचना होगा।
- › चौथा कदम: FRBMA (राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम) के अनुसार, सरकार को 'राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 3% तक' लाने का लक्ष्य रखना होगा।
- › पांचवां कदम: FRBMA यह भी कहता है कि प्रत्येक वर्ष 'सकल घरेलू उत्पाद का 0.3% राजकोषीय घाटा में कटौती' करनी चाहिए। यह धीरे-धीरे और व्यवस्थित तरीके से घाटे को कम करने में मदद करता है।
- › छठा कदम: यदि कर राजस्व से लक्ष्य पूरा नहीं होता, तो व्यय में कटौती से समायोजन करना होगा। FRBMA सरकार को वित्तीय पारदर्शिता बनाए रखने और संसद में नियमित रिपोर्ट पेश करने के लिए भी बाध्य करता है।

उत्तर – सरकार करों में वृद्धि या व्यय में कटौती के माध्यम से घाटे में कमी कर सकती है। FRBMA के तहत, सरकार का लक्ष्य राजकोषीय घाटे को GDP के 3% तक लाना है, जिसमें वार्षिक 0.3% की कटौती का प्रावधान है, साथ ही वित्तीय पारदर्शिता और प्रभावी ऋण प्रबंधन भी सुनिश्चित करना है।

उदाहरण 18. मान लीजिए एक शर्ट बनाने वाली कंपनी 500 रुपये की सामग्री खरीदती है, जिस पर 10% GST लगा। फिर कंपनी उस शर्ट को 800 रुपये में दुकानदार को बेचती है, जिस पर 10% GST लगता है। दुकानदार फिर उस शर्ट को ग्राहक को 1200 रुपये में बेचता है, जिस पर 10% GST लगता है। GST प्रणाली में 'इनपुट टैक्स क्रेडिट' (Input Tax Credit) का इस्तेमाल करते हुए, हर स्टेज पर कितना GST सरकार को जाएगा?

› स्टेज 1 (सामग्री खरीदना): कंपनी ने 500 रुपये पर 10% GST (50 रुपये) दिया। यह कंपनी का 'इनपुट टैक्स' है।

› स्टेज 2 (दुकानदार को बेचना): कंपनी ने 800 रुपये पर 10% GST (80 रुपये) लगाया। कंपनी को यह 80 रुपये ग्राहक से मिलेंगे। अब कंपनी सरकार को $80 - 50 = 30$ रुपये GST देगी (50 रुपये का 'इनपुट क्रेडिट' लेगी)।

› स्टेज 3 (ग्राहक को बेचना): दुकानदार ने 1200 रुपये पर 10% GST (120 रुपये) लगाया। यह 120 रुपये ग्राहक देगा। दुकानदार ने पहले कंपनी को 80 रुपये GST दिया था। तो दुकानदार सरकार को $120 - 80 = 40$ रुपये GST देगा (80 रुपये का 'इनपुट क्रेडिट' लेगा)।

› कुल GST सरकार को गया: 50 (स्टेज 1 - कंपनी का अपना खर्चा, बाद में क्रेडिट) + 30 (स्टेज 2) + 40 (स्टेज 3) = 120 रुपये। ध्यान दें, ग्राहक ने कुल 120 रुपये का GST दिया।

उत्तर – कंपनी सरकार को 30 रुपये GST देगी, और दुकानदार सरकार को 40 रुपये GST देगा। कुल 70 रुपये सरकार के पास गए, और जो 50 रुपये कंपनी ने शुरुआत में दिए थे वो बाद में क्रेडिट में एडजस्ट हो गए, जिससे अंत में ग्राहक ने कुल 120 रुपये GST दिया।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'सरकारी बजट के अर्थ' और 'इसके घटकों' पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। परिभाषा को ठीक से समझें और राजस्व व पूंजीगत घटकों को ध्यान से पढ़ें।
- यह 'आवंटन कार्य' वाला सवाल बोर्ड परीक्षा में अक्सर सार्वजनिक वस्तुओं की विशेषताओं के साथ पूछा जाता है। 'गैर-प्रतिद्वंद्वी' और 'गैर-अपवर्जनीय' शब्दों को अच्छे से समझकर उनके उदाहरणों के साथ उत्तर देना, पूरे अंक दिलाएगा।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे प्रश्न आते हैं कि सरकार बजट के पुनर्वितरण कार्य को कैसे पूरा करती है, तो उदाहरणों के साथ अच्छी तरह तैयार रहना।
- यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 या 5 नंबर के प्रश्न के रूप में आता है, जिसमें पूछा जाता है कि सरकार मंदी या मुद्रास्फीति में क्या कदम उठाती है।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पूंजीगत और राजस्व प्राप्तियों के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से समझ लेना, क्योंकि इस पर सीधे प्रश्न आते हैं।
- यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। राजस्व व्यय और पूंजीगत व्यय के बीच का अंतर अक्सर पूछा जाता है। उनके उदाहरणों को अच्छे से याद रखना और समझना कि कौन सा व्यय किस श्रेणी में आता है।
- पूंजीगत व्यय की परिभाषा और इसके 2-3 उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से तैयार कर लेना।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'एक नंबर' के प्रश्न में परिभाषा या पहचान के रूप में पूछी जाती है। इसके अलग-अलग उदाहरण भी आ सकते हैं।
- यह विषय 'बोर्ड परीक्षा' के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। राजस्व घाटे की 'परिभाषा' और 'सूत्र' को अच्छे से याद करें, साथ ही इसके 'निहितार्थ' (implications) पर भी प्रश्न आ सकते हैं।
- राजकोषीय घाटा और राजस्व घाटा के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से समझें और इनके सूत्रों को याद रखें। यह बोर्ड परीक्षा के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है।
- यह सूत्र 'सकल प्राथमिक घाटा = सकल राजकोषीय घाटा - निवल ब्याज दायित्व' बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस पर आधारित सवाल अक्सर पूछे जाते हैं, इसलिए इसे अच्छे से याद रखना और इसका अर्थ समझना ज़रूरी है।

- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'सरकारी व्यय गुणक' और 'कर गुणक' के सूत्रों को याद रखें और उन्हें उदाहरणों के साथ समझाना सीखें, खासकर 'MPC' (सीमांत उपभोग प्रवृत्ति) के अलग-अलग मानों के साथ गणना करना।
- संतुलित बजट गुणक 'इकाई के बराबर' क्यों होता है, इसकी पूरी व्याख्या और आनुपातिक करों के 'गुणक पर प्रभाव' को ग्राफ के साथ समझाने वाले प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में आते हैं।
- रिकार्डों समतुल्यता पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं, खासकर यह परंपरागत दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है। इसके तर्क को अच्छे से समझना और अपनी भाषा में स्पष्ट करना सीखो।
- FRBMA के प्रमुख उद्देश्यों और प्रावधानों को अच्छे से समझ लो, क्योंकि यह अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता है। खासकर इसके लक्ष्य जैसे GDP का 3% राजकोषीय घाटा।

एक नज़र में रिवीज़न

- › सरकारी बजट: अनुमानित प्राप्तियों और खर्चों का वार्षिक ब्यौरा।
- › आवंटन कार्य: सार्वजनिक वस्तुओं (गैर-प्रतिद्वंद्वी, गैर-अपवर्जनीय) का सरकार द्वारा प्रावधान।
- › आय असमानता कम करना: कर व हस्तांतरण भुगतान से न्याय-संगत वितरण।
- › स्थिरीकरण कार्य: आय-रोजगार उतार-चढ़ाव कम करना, समग्र मांग नियंत्रण, मंदी/मुद्रास्फीति में हस्तक्षेप।
- › देयता पैदा करती हैं या वित्तीय संपत्ति कम करती हैं।
- › राजस्व व्यय: संपत्ति नहीं बनती, कर्ज कम नहीं होता।
- › पूंजीगत व्यय = परिसंपत्ति निर्माण या ऋण में कमी।
- › संतुलित: आय=व्यय; अधिशेष: आय>व्यय; घाटा: आय<व्यय।
- › राजस्व घाटा = राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियाँ; उपभोग व्यय के लिए उधार लेना।
- › राजकोषीय घाटा = कुल व्यय - (राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियाँ); कुल उधार ज़रूरत।
- › प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज अदायगी; वर्तमान वित्तीय असंतुलन
- › राजकोषीय नीति = सरकार का खर्च/कर, गुणक = आय पर कई गुना प्रभाव।
- › संतुलित बजट गुणक = 1; आनुपातिक कर गुणक का मान कम करते हैं।
- › सरकारी ऋण, बोझ, रिकार्डों समतुल्यता: कर और ऋण समतुल्य वित्त साधन।
- › घाटा कम करने के तरीके: कर बढ़ाना, व्यय घटाना। FRBMA घाटा नियंत्रण कानून।